UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015, (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. – 14-19

"स्नातक स्तर के तकनीकी एवं गैर तकनीकी विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन"

डॉ कमल जैन
विभागाध्यक्ष ,वाणिज्य संकाय
शासकीय स्नात्कोत्तर महाविद्यालय
खरगोन

डॉ सुरेन्द्र कुमार तिवारी,
प्राचार्य ,गुलाबबाई यादव स्मृति
शिक्षा महाविद्यालय
बोरावॉ,

डॉ वैशाली तिवारी
अतिथि विद्वान
वाणिज्य संकाय
शासकीय स्नात्कोत्तर
महाविद्यालय, खरगोन

सारांश

आधुनिकता की दौड़ में आज का मानव बहुत तीव्र गति से आगे बढ़ रहा है। तात्कालिक समय पर प्रत्येक दिन सुबह से शाम तक, घर से विद्यालय तक, परिवार से समाज तक विद्यार्थियों की गतिशीलता और माता पिता की आकांक्षा बढ़ रही है। सार्थक और मूल्यपरक शिक्षा के द्वारा ही आज का परिवार, समाज, संपूर्ण भारत एवं विश्व का कल्याण संभव है। वैज्ञानिक आविष्कार एवं औद्योगीकरण ने मूल्यों के स्वरूप को परिवर्तित कर दिया है। आज समाज के चारों ओर नैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों में गिरावट देखने को मिलती है। जिस तीव्र गति से हम अपने शाश्वत मूल्यों में अपनी आस्था खोते जा रहे हैं तथा जीवन को सुखी बनाने की जी तोड़ मेहनत कर रहे हैं, वह एक असुरक्षित भविष्य का द्योतक है। अतः इक्कीसवी शताब्दी में सुखद भविष्य को सुनिश्चित करने के लिये आधुनिक एवं पुरातन मूल्यों में समन्वय लाने के लिये मूल्यों की शिक्षा अत्यन्त आवश्यक है। समाज व प्रतिनिधित्व करने वाली संस्थाओं को मूल्यों के विकास पर जोर देना चाहिये। विद्यालयों में मूल्यपरक क्रियाओं का आयोजन होना चाहिये तथा यह प्रक्रिया महाविद्यालय स्तर पर भी समय–समय में आयोजित होनी चाहिये जिससे विद्यार्थी प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से अपने आचार व व्यवहार में मूल्यों को समाहित कर सकें क्योंकि मूल्यों को पढ़ाया नहीं जा सकता है। विद्यालय तथा महाविद्यालय में आयोजित होने वाली क्रियाओं के माध्यम से त्याग, सेवा, कर्तव्य, निष्ठा, नेतृत्व, श्रम की गरिमा, देशप्रेम आदि मूल्यों का विकास किया जा सकता है।

शब्दकुंजीः तकनीकी छात्र, गैरतकनीकी छात्र, व्यक्तिगत मूल्य ।

प्रस्तावना

मूल्य मानव के मूलधन होते हैं, और मानव के जीवन मूल्यों का बहुत अधिक महत्व है। उसके जीवन का प्रत्येक कार्य किसी न किसी मूल्य से संबंधित रहता है। यह व्यक्तिगत मूल्य वह अपने जीवन के प्रांरभिक वर्षो से ही सीखने लगता है तथा धीरे–धीरे ये मूल्य उसके आचार व्यवहार का अंग बन जाते है। व्यक्तिगत मूल्य जन्मजात नहीं होते वरन् समाज में रहकर ही सीखे व अर्जित किए जाते हैं। मूल्य सामज का दर्पण होते है। इनके द्वारा ही सामज की वास्ताविक सता को स्वीकारा जाता है। मूल्य केन्द्रीत शिक्षा चन्द्रमा जैसी निर्मल होकर आनन्दमय एवं स्वयमेव प्रकाशमय होती है। इसके द्वारा मूल्य केन्द्रीत सामाजिक व्यवस्था, मूल्य केन्द्रीत आर्थिक व्यवस्था, तथा मूल्य केन्द्रीत पारितंत्र की स्थापना की जाती है। इसी से ही सत्यं शिवम् व सुन्दरम् रूपी सामज की स्थापना होती है। और यह समाज के प्रत्येक व्यक्ति में निहित है। मूल्य शिक्षा की अवधारणा आधुनिक एवं व्यापक है। परंपरागत क्रम में धार्मिक शिक्षा, नैतिक शिक्षा आदि जो प्रचलित हैं उनसे यह भिन्न है। मूल्यपरक शिक्षा से तात्पर्य उस शिक्षा से है जिसमें हमारे नैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक मूल्य समाहित हों। हमारा वर्तमान युग औद्योगिक युग से आगे एक नये युग में संक्रमित हो रहा है। आज मनुष्य पहली बार ऐसी

UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015, (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. – 14-19

स्थिति का सामना कर रहा है जब पूर्ण विध्वंश के लक्षण प्रकट हैं। मानव इतिहास के इस भयंकर संकटकाल में शिक्षा की भूमिका विशेष रूप से महत्वपूर्ण है।

अध्ययन का औचित्य

आज भारत आधुनिकता के दौर से गुजर रहा है और इस अंधी दौड़ में सामाजिक, नैतिक, सांस्कृतिक, एवं आध्यात्मिक मूल्यों का खण्डन हो रहा है। धर्म कमजोर हो रहा है। शक्ति एवं ज्ञान का दुरूपयोग हो रहा है। राष्ट्रों का एक दूसरे के प्रति विश्वास नहीं है। तस्करी, बेईमानी, भ्रष्टाचार, क्रूरता, अनुशासनहीनता तथा अहिंसा का बोलबाला है। ऐसी विकट स्थिति में शिक्षा को मूल्य–उन्मुख बनाना अत्यन्त आवश्यक है। केवल मूल्यपरक शिक्षा ही वैयक्तिक हित, सामाजिक हित, प्रेम, शान्ति, सद्भावना तथा विवेक को विकसित कर सकती है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

शोध अध्ययन के निम्न उद्देश्य हैं :–

1. तकनीकी छात्र एवं छात्राओं के मूल्यों का अध्ययन करना।
2. गैरतकनीकी छात्र एवं छात्राओं के मूल्यों का अध्ययन करना।
3. तकनीकी छात्र एवं गैरतकनीकी छात्रों के मूल्यों का अध्ययन करना।

परिकल्पना –

1. तकनीकी छात्र एवं छात्राओं के मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
2. गैरतकनीकी छात्र एवं छात्राओं के मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
3. तकनीकी छात्र एवं गैरतकनीकी छात्रों के मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

शोध प्रविधि :

प्रस्तुत शोध सर्वेक्षण विधि द्वारा सम्पन्न किया गया है। इस शोध में खरगोन जिले के सम्पूर्ण महाविद्यालय के विद्यार्थियों को जनसंख्या माना गया है। खरगोन जिले के दो महाविद्यालय के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों का चयन सम्भावना प्रतिदर्शन विधि से किया गया। खरगोन जिले के स्नातक स्तर के लिए तकनीकी विद्यार्थियों हेतु खरगोन के जेआयटी कॉलेज के अभियांत्रिकी विद्यार्थियों तथा जैवतकनीकी विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में प्रयुक्त किया गया है। गैरतकनीकी विद्यार्थियों के अन्तर्गत खरगोन पी जी कॉलेज के वाणिज्य संकाय संकाय के छात्रों को न्यादर्श के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

इस शोध में महाविद्यालय के स्नातक विद्यार्थी स्वतंत्र चर व व्यक्तिगत मूल्य आश्रित चर हैं। विद्यार्थियों के भेद लिंग तथा तकनीकी एवं गैरतकनीकी संकाय के रूप में लिया गया है। तकनीकी संकाय से 30 छात्र एवं 30 छात्राएं तथा गैरतकनीकी संकाय से 30 छात्र एवं 30 छात्राओं को लिया गया है। महाविद्यालय के विद्यार्थियों के मूल्यों के मापन हेतु डॉ. शेरी व डॉ. वर्मा 1971 द्वारा निर्मित व्यक्तिगत मूल्य प्रश्नावली **(P.V.Q.)** का प्रयोग किया गया है। इस मापनी में व्यक्तिगत मूल्य से संबंधित 10 पक्षों पर प्रत्येक में चार प्रश्न किए गये हैं जो निम्नलिखित प्रकार के हैं।

1.	**धार्मिक मूल्य**	4 प्रश्न
2.	**सामाजिक मूल्य**	4 प्रश्न
3.	**प्रजातांत्रिक मूल्य**	4 प्रश्न
4.	**सौन्दर्यपरक मूल्य**	4 प्रश्न

UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015, (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. – 14-19

5.	**आर्थिक मूल्य**	4 प्रश्न
6.	**ज्ञानात्मक मूल्य**	4 प्रश्न
7.	**सत्ताशक्ति मूल्य**	4 प्रश्न
8.	**परिवारिक सम्मान**	4 प्रश्न
9.	**सांस्कृतिक मूल्य**	4 प्रश्न
10.	**स्वास्थ्य मूल्य**	4 प्रश्न
	कुल प्रश्न =	40 प्रश्न

इस मापनी में कुल प्रश्नों की संख्या 40 है तथा यह प्रश्नावली स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के मूल्य मापन के लिये सर्वोत्तम है।

परिकल्पनाओं का परीक्षणः–

परिकल्पना 1 – तकनीकी छात्रों एवं छात्राओं के व्यक्तिगत मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाएगा.

तालिका कमांक – 1

तकनीकी संकाय के छात्र एवं छात्राओं के मूल्यों की तुलना

क्र.	विद्यार्थियों का समूह	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	df	टी का मान	परिणाम
1	तकनीकी छात्र	30	111.97	14.52	58	0.85	सार्थक नहीं है।(. 01स्तर पर)
2	तकनीकी छात्राएं	30	114.37	5.34			

ग्राफ कमांक – 1

तकनीकी संकाय के छात्र एवं छात्राओं के मूल्यों की तुलना

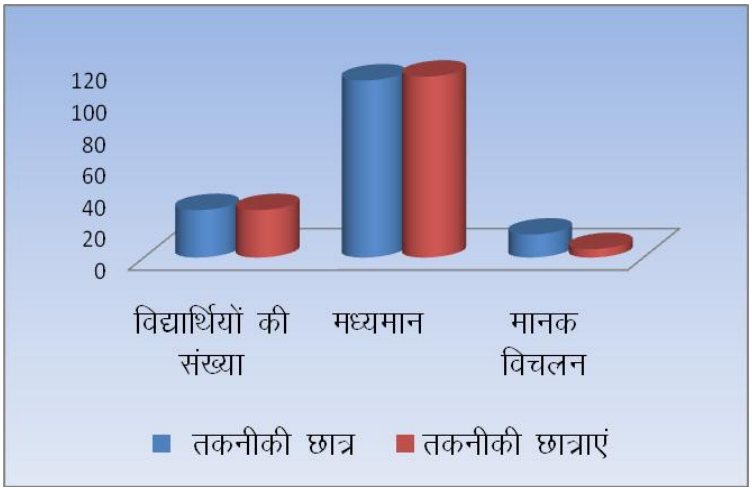

UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015, (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. – 14-19

व्याख्या– उपरोक्त सारणी कमांक – 1से स्पष्ट है कि तकनीकी छात्रों के प्राप्तांकों का मध्यमान 111.97 व छात्राओं के प्राप्तांकों का मध्यमान 114.37 है। छात्राओं के प्राप्तांकों का मध्यमान बालकों के प्राप्तांकों के मध्यमान से अधिक है। तकनीकी छात्र एवं छात्राओं के PVQ.परीक्षण से प्राप्तांकों के मध्यमान में 2.4 का अन्तर है। उपरोक्त मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता t परिक्षण से ज्ञात की गई है। तकनीकी सकांय के छात्र–छात्राओं का *df* (*n*1–*n*2 –2) 58 पर टी का मान 0.85 प्राप्त हुआ। 0.05 सार्थकता स्तर पर t का सारणीगत मान 2.60 है। इस प्रकार गणना द्वारा प्राप्त मान सारणीगत मान से कम है (0.85 < 2.60)। .01 सार्थक अंश में अतः शून्य परिकल्पना **'तकनीकी छात्रों एवं छात्राओं के व्यक्तिगत मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाएगा.'** स्वीकृत की जाती है। अतः कहा जा सकता है कि तकनीकी छात्रों एवं छात्राओं के व्यक्तिगत मूल्य प्राप्तांकों से मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

तालिका कमांक – 2
गैर तकनीकी संकाय के छात्र एवं छात्राओं के मूल्यों की तुलना

क्र.	विद्यार्थियों का समूह	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	df	टी का मान	परिणाम
1	गैरतकनीकी छात्र	30	112.17	5.34	58	1.21	सार्थक नहीं है।(.01स्तर पर)
2	गैरतकनीकी छात्राएं	30	115.6	14.53			

ग्राफ कमांक – 2
गैर तकनीकी संकाय के छात्र एवं छात्राओं के मूल्यों की तुलना

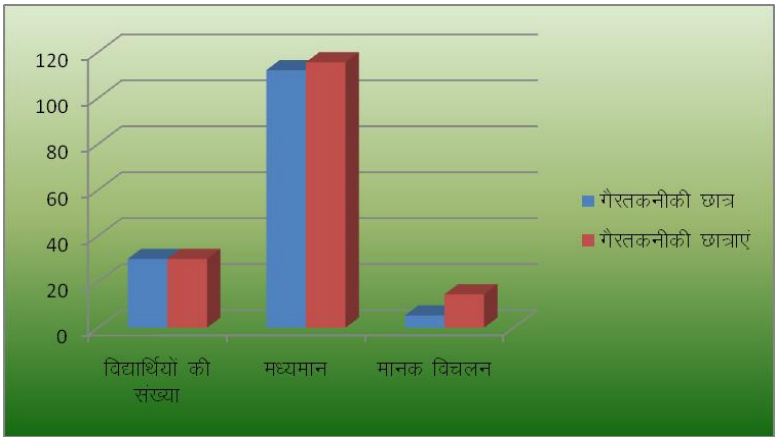

व्याख्या– उपरोक्त सारणी कमांक – 2 से स्पष्ट है कि गैरतकनीकी छात्रों एवं छात्राओं के PVQ.परीक्षण से प्राप्तांकों के मध्यमान में 3.43 का अन्तर है। गैरतकनीकी छात्राओं के प्राप्तांकों का मध्यमान 115.6 व छात्रों के प्राप्तांकों का मध्यमान 112.17 है। जिसमें छात्राओं के प्राप्तांकों का मध्यमान ज्यादा है। उपरोक्त मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता t परीक्षण से ज्ञात की गई है। गैरतकनीकी छात्र व छात्राओं के *df 58* पर टी का मान 2.21 है व .01 सार्थकता स्तर पर टी का मान 2.60 है। इस प्रकार गणना द्वारा प्राप्त मान सारणीयन मान से कम है (1-21 <

UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015, (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. – 14-19

2.60)। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती हैं गैरतकनीकी छात्रों एवं छात्राओं के प्राप्तांकों के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

तालिका कमांक – 3
तकनीकी छात्रों एवं गैरतकनीकी छात्रों के मूल्यों की तुलना

क्र.	विद्यार्थियों का समूह	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	df	टी का मान	परिणाम
1	तकनीकी छात्र	30	111.97	14.52	58	0.07	सार्थक नहीं है।(. 01स्तर पर)
2	गैरतकनीकी छात्र	30	112.17	5.34			

ग्राफ कमांक – 3
तकनीकी छात्रों एवं गैरतकनीकी छात्रों के मूल्यों की तुलना

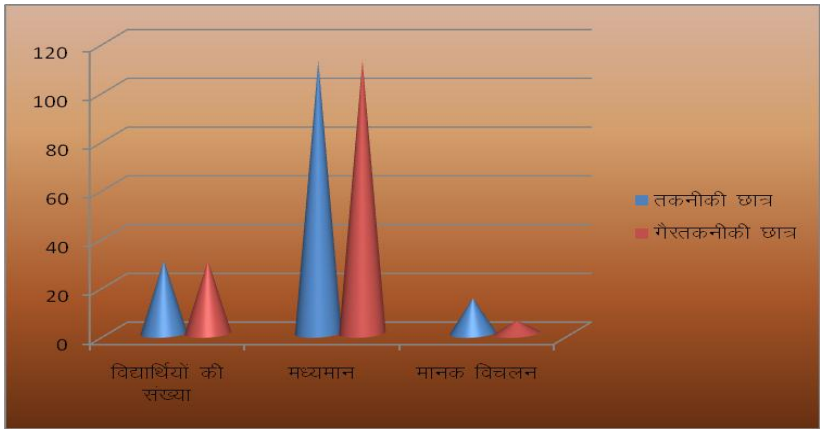

व्याख्या – उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि तकनीकी छात्र के PVQ. परीक्षण प्राप्तांकों के मध्यमान में तथा गैरतकनीकी छात्र के प्राप्तांकों के मध्यमान में 0.2 का अन्तर है। तकनीकी छात्रों के प्राप्तांकों का मध्यमान 111.97 व गैरतकनीकी छात्रों के प्राप्तांकों का मध्यमान 112.17 है। गैरतकनीकी छात्रों के प्राप्तांकों का मध्यमान तकनीकी छात्रों के प्राप्तांकों के मध्यमान से अधिक है।

उपरोक्त मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता t परीक्षण से ज्ञात की गई है। तकनीकी व गैरतकनीकी छात्रों के df *58* पर का t का मान 0.07 प्राप्त हुआ। 0.05 सार्थकता स्तर पर t का सारणीगत मान 2.00 व 0.01 सार्थकता स्तर पर t का सारणीगत मान 2.60 है। चूंकि गणना से प्राप्त t मान सारणीगत t के मान से कम है(0.07 < 2.60)। अत : शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जानी है और कहा जा सकता है कि तकनीकी छात्रों व गैरतकनीकी छात्रों के व्यक्तिगत मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं होता।

शोध के शैक्षिक निहितार्थ :

वर्तमान समय में तीव्र विकास के साथ ही व्यक्तिगत मूल्यों का पतन भी तीव्रता से हो रहा है जो मानव सभ्यता हेतु अत्यन्त हानिकारक है। हमें हरसंभव प्रयत्न कर व्यक्तिगत मूल्यों के इस पतन को रोकना होगा। मूल्यों के विकास में परिवार, समुदाय एवं राष्ट्र का योगदान होता है, परंतु शिक्षा के औपचारिक अभिकरण, विद्यालय तथा महाविद्यालय

UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015, (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. – 14-19

इस कार्य में सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदान करता है। मूल्यों के विकास के लिये कार्य करते समय हमें प्रत्येक मूल्य को परिभाषित करने, उसे समझने तथा व्यवहार के अनुरूप व्यवस्थित करना होगा। विद्यार्थियों में निहित मूल्य को विकसित कर उनमें समाज, राष्ट्र एवं विश्व बंधुत्व की भावना जागृत करना अनिवार्य है। व्यक्तिगत मूल्य एकमात्र ऐसा कारक है जो परिवार, समाज, राष्ट्र तथा विश्व को एक साथ अलौकिक प्रकाश से सुशोभित कर सकता है। आज भारत आधुनिकता के दौर से गुजर रहा है और इस अंधी दौड़ में सामाजिक, नैतिक, सांस्कृतिक, एवं आध्यात्मिक मूल्यों का खण्डन हो रहा है। धर्म कमजोर हो रहा है। शक्ति एवं ज्ञान का दुरूपयोग हो रहा है। राष्ट्रों का एक दूसरे के प्रति विश्वास नहीं है। तस्करी, बेईमानी, भ्रष्टाचार, क्रूरता, अनुशासनहीनता तथा अहिंसा का बोलबाला है। ऐसी विकट स्थिति में शिक्षा को मूल्य–उन्मुख बनाना अत्यन्त आवश्यक है। केवल मूल्यपरक शिक्षा ही वैयक्तिक हित, सामाजिक हित, प्रेम, शान्ति, सद्भावना तथा विवेक को विकसित कर सकती है और अन्तराश्ट्रीय सद्भावना विकसित की जा सकती है। प्रस्तुत शोध के माध्यम से तकनीकी एवं गैरतकनीकी विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है और यह इस कथन का परिचायक है कि संकाय के परिवर्तन होने से व्यक्तिगत मूल्यों में सार्थक परिवर्तन नहीं होता है।

संदर्भ ग्रंथ :

- अग्रवाल, अग्रवाल, रेखा (1986). इफैक्ट ऑफ ज्यूडीसियल इंक्वायरी मॉड ऑल टीचिंग ऑन द डेवलपमेंट ऑफ स्टूडेंट वेल्यू, यूनिवर्सिटी ऑफ इलाहाबाद, इलाहाबाद।
- अरोरा डा. संतोष (2009) प्राथमिक विद्यालयों में मूल्य आधारित क्रियाओं का अध्ययन, भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, वर्श–28, अंक–2, जुलाई दिसंबर, पृश्ठ 87–90 ।
- वर्मा डॉ. जी. एस. (2010) मूल्य शिक्षा वॉल—1 इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस कॉलेज रोड, मेरठ।पृष्ट 2–5
- चट्टोपाध्याय एवं दत्त (1956): भारतीय दर्शन, पटना पुस्तक भण्डार, पटना।
- गार्डिया, आलोक (2007): ए स्टडी ऑफ सम डिटरमिनर ऑफ डेमोक्रेटिक वेल्यू एमंग हायर सेकेण्डरी स्कूल बी.एच.यू, वाराणसी।
- कपिलः एच. के., अनुसंधान, विधियॉ,, एच.पी. भार्गव, बुक हाऊस, आगरा।
- कलिंगर, फ्रेंड. (1973). फाउंडेशन आफ विहेवरल रिसर्च, न्यू देहली, सूरजीत पब्लिके"ान, दिल्ली।
- पाण्डेय राम"शकल एवं मिश्र करूणा"ांकर (1991) मूल्यशिक्षण, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर।
- पाण्डेय एस. (ईडी) (1986) जीवन मूल्य, आर.एस.ई.आर.टी. उदयपुर।
- भोरी जी.पी. एण्ड वर्मा आर.पी.(1972): पर्सनल वेल्यू क्योशनरिंग, आगरा, नेशनल साइकोलॉजी कार्पोरे"ान, आगरा।
- सिंह डा. सारनाथ, कुमार अनिल (2008): माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं के जीवन मूल्यों की तुलना, भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, वर्ष 27, अंक–2, जुलाई–दिसंबर पृष्ठ 118–132।
- सिंह रामधीरज (2008) मानव जीवन में मूल्यों की अपरिहार्यता, एन. इंटरनेशनल जनरल ऑफ टीचर एजूकेशन शिक्षक शिक्षा शोध पत्रिका वॉल–02 (2) जून 2008।
- सिंह रंजना (2009): विद्यालयों में मूल्यपरक शिक्षा, प्रकाशित पेपर, शिक्षा विभाग वाराणसी, महात्मा गांधी विश्वविद्यालय, वाराणसी।